रजि. नं. पी.बी./जे.एल–/0011/2012-14 RNI No. 26281/74

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–74, अंक : 55, 13-16 अप्रैल 2017 तदनुसार 4 वैशाख सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

दाता को भगवान् देता है

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

इन्द्रो यज्वने गृणते च शिक्षत उपेद्ददाति न स्वं मुषायति।
भूयोभूयो रयिमिदस्य वर्धयन्नभिन्ने खिल्ये नि दधाति देवयुम्।।

–अथर्व० ४।२१।२

शब्दार्थ–इन्द्रः = भगवान् **यज्वने** = यज्ञ करने वाले को **गृणते** = उपदेश करने वाले को **च** = और **शिक्षते** = शिक्षा देने वाले को **उप** = समीप होकर **स्वम्** = धन **ददाति इत्** = देता ही है। **न** + **मुषायति** = छिपाता नहीं। **भूयः** + **भूय** = बार-बार **अस्य** = इसके **रयिम्** = धन को **वर्धयन** + **इत्** = बढ़ाता हुआ ही **देवयुम्** = ईश्वराभिलाषी को, भगवद्भक्त को **अभिन्ने** = अखण्ड **खिल्ये** = खिल्य में, स्थिति में, **निदधाति** = नितरां धारण करता है।

व्याख्या–दान का वैदिक धर्म में बड़ा मान है। दान देने की प्रेरणा करते हुए ऋग्वेद में कहा गया है–**'पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान्द्राघीयांसमनुपश्येत पन्थाम्'** [ऋ० १०।११७।५]–धनवान् मनुष्य याचक को प्रसन्न ही करे, दे, उस लम्बे मार्ग को देखे। संसार का मार्ग बहुत लम्बा है, अर्थात् जीवन-यात्रा बड़ी लम्बी है, वह सारी हमारी दृष्टि के आगे नहीं है। जाने किस समय क्या सामने आ जाए ? दान देना मानो संसार-यात्रा के लिए पाथेय (तोषा) संग्रह करना है, क्योंकि–**इन्द्रो यज्वने गृणते च शिक्षत उपेद् ददाति'** = भगवान् याज्ञिक, उपदेशक और शिक्षक को तो देता ही है।

जिसने लोकोपकार में जीवन लगा रखा है, जो लोगों को उपदेश द्वारा सुमार्ग पर लाता रहता है और जो लोगों को उत्तम शिक्षा देता है, उसे यदि भगवान् न देंगे तो और से किस को देंगे ? भगवान् उस पर सब-कुछ प्रकट कर देता है–**'न स्वं मुषायति'** = न धन छिपाता है और न अपना-आपा छिपाता है। भगवान् निरन्तर यज्ञ कर रहा है, निरन्तर शिक्षा और उपदेश दे रहा है। उसका जो अनुकरण करता है, मानो वह उसके कार्य में सहयोग देता है। सहयोगी से प्रभु कुछ नहीं छिपाता। धन क्या उस पर अपना 'अपनापन' भी प्रकट कर देता है, उस धन को कभी घटने नहीं देता, वरन्–**'भूयोभूयो रयिमिदस्य वर्धयन्** = बार-बार इसके धन को बढ़ाता है और–**'अभिन्ने खिल्ये नि दधाति देवयुम्'** = भगवद्भक्त को अखण्ड खजाने पर बिठा देता है ! तभी तो ऐसे भक्तों के धन के सम्बन्ध में कहा है–

न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिरादधर्षति।
देवाँश्च याभिर्यजते ददाति च ज्योगित्ताभिः सचते गोपतिः सह।।

–अथर्व० ४।२१।३

गोपति जिन पदार्थों से देवयज्ञ करता है या जो पदार्थ दान में देता है, उनके साथ वह संयुक्त ही रहता है, क्योंकि न तो वे नष्ट होते हैं, न उन्हें चोर चुराता है और न ही दुःखदायी शत्रु दबाता है। सचमुच धन वही है जो दूसरों की तृप्ति का साधन बन सके। दान, यज्ञ से ही वह दूसरों की प्रीति का साधन बन सकता है। **(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

आर्य समाज मंदिर, पटियाला में चल रहा छह दिवसीय यजुर्वेद पारायण महायज्ञ पूर्ण आहुति के साथ सम्पन्न

वेद ईश्वर का दिया हुआ ज्ञान है और यह सम्पुर्ण मानवता के कल्याण के लिये है, वेदों के ज्ञान से ही मानव समाज की समस्त समस्याओं का समाधान संभव है, वेद जीवन के सभी उत्तम उद्देश्यों को प्राप्त करने की शक्ति प्रदान करते है, यह कहना था परम पूज्य स्वामी विदेह योगी जी का जो आर्य समाज मंदिर, पटियाला में आयोजित छह दिवसीय यजुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वार्षिक उत्सव में ब्रह्मा के रूप में विशेष रूप से कुरुक्षेत्र से पधारे थे।

उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि वेद ईश्वर कृत रचना है तथा वेदों का निरंतर स्वाध्याय मनुष्य को सही मार्ग प्रशस्त करता है और इसी से ही सभी समस्याओं का समाधान संभव है, यजुर्वेद में ईश्वर ने कर्म विज्ञान का उपदेश दिया है कि मनुष्य को ज्ञानपूर्वक कर्म करने चाहिए, अज्ञान में किए हुए कर्म कभी सुख नहीं दे सकता, उन्होंने मुस्कराते रहने और सत्य कर्म करने पर बल दिया जिससे दूसरों का भला हो सके।

आगे उन्होंने बताया कि महर्षि दयानंद सरस्वती ने भी वेदों की और लौटने का सन्देश दिया और देश दुनिया में धर्म के नाम पर फैले पाखंड एवं अंध विश्वास का जोरदार खंडन किया है, वेद ईश्वरीय ज्ञान है और केवल इसी से ही प्राणी मात्र का भला हो सकता है।

चंडीगढ़ से पधारे संगीत सम्राट पंडित उपेन्द्र आर्य ने अपने मधुर वैदिक भजनों-जपले ओ३म् का नाम, कोई जहर पिलाये, हजारो दुआएं आदि से उपस्थित लोगों को मन्त्र मुग्ध कर दिया एवं सारा वातावरण भक्तिमय हो गया, पंडित गजेन्द्र शास्त्री (पुरोहित) द्वारा लगातार छह दिन यजुर्वेद पाठ बड़ी श्रद्धा और आस्था से किया गया।

इस अवसर पर प्रधान श्री राज कुमार सिंगला, आर्य समाज मंदिर पटियाला ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट पेश की जिसमें वर्ष भर हुए कार्यों की जानकारी दी और आये हुए सभी गणमान्य व्यक्तियों का और विशेष रूप से पटियाला मीडिया का धन्यवाद और सम्मान किया। इस मौके पर प्रिंसिपल श्री एस आर प्रभाकर, डी ए वी पब्लिक स्कूल, प्रिंसिपल संतोष गोयल, आर्य सीनियर सेकंडरी स्कूल, डॉ. सुनील आर्य, डॉ. संजय सिंगला, आर्य समाज समाना, राजपुरा, नाभा, चंडीगढ़, अम्बाला, सनौर, सरहंद एवं पटियाला समाज के पदाधिकारी लव कुमार, वीरेंदर सिंगला, वेद प्रकाश तुली, कर्नल आनंद मोहन सेठी, बिजेंदर शास्त्री, प्रवीण कुमार, श्रीमती संगीता सिंगला, हर्ष वधवा, गुलाब सिंह, बैजनाथ, के के मौदगिल, परवीन चौधरी, रमेश गंडोत्रा एवं शहर के अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने इस महायज्ञ में आहुतियाँ दी।

–राजकुमार सिंगला, प्रधान आर्य समाज

जीवन रक्षा के लिए आत्मबल को बनाए रखें

-ले० डॉ. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद उ. प्र. भारत चलभाष ०९३५४७४५४२६

जिस व्यक्ति का आत्मबल मजबूत है, उसे कोई पराजित नहीं कर सकता। आत्मबल ही सब सुखों का आधार है। जिस में आत्म बल नहीं, वह जीवित रहते हुए भी मृतक के समान है। कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो प्रति क्षण अपनी ही निंदा करते दिखाई देते हैं। उनका यह स्वभाव उनमें आत्मबल की कमी ही दिखाता है। अपने पास बलवान सेना होते हुए भी आत्मबल विहीन योद्धा रणक्षेत्र में विजयी नहीं होता, जबकि आत्मबल का धनी कम सेना होते हुए भी विशाल सेना को नष्ट कर देता है। इस लिए जीवन की उन्नति की सफलता के लिए आत्म बल को हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। इस सम्बन्ध में यजुर्वेद तथा सामवेद में मन्त्र इस प्रकार हमें आदेश दे रहा है :

यो नः अ र्णो, यश्च निष्ट्यो जिघांसति।

देवास्तं सर्वे धुर्वन्तु, ब्रह्म वर्म ममान्तारम।।

ऋग्वेद ६.७५,१९ सामवेद १८७२।।

जब भी कोई हमारा अपना मित्र या कोई परकीय अथवा बाहरी व्यक्ति हमें नष्ट करना चाहता है तो समस्त देवता उसे नष्ट करें। आत्मबल युक्त में सुरक्षित रहूँ।

ऊपर मन्त्र के भावार्थ से स्पष्ट होता है कि मन्त्र दो बातों की ओर संकेत करता है।

(१) जो व्यक्ति दूसरों की हानि करते हैं अथवा दूसरों को मारते हैं, देवता ऐसे लोगों को नष्ट करें।

(२) ब्रह्म ही आतंरिक शक्ति है।

अपने स्वार्थ को सम्मुख रखते हुए तथा उसकी पूर्ति के लिए अनेक समय पराये तो पराये अपने भी हानि पहुँचाने के लिए क्रियमाण होते हैं। लोभ मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। लोभ के कारण शत्रु तो प्राय: विनाश का खेल खेलते ही हैं, अनेक बार यह लोभ अपने मित्रों को, परिजनों को भी शत्रु बना देता है। परिवार की धन सम्पति के प्रश्न पर अनेक बार भाईयों को लड़ते व एक दूसरे को काटते देखा है। भारत में एक जाति तो माता पिता तक को भी नहीं छोड़ती। लोभ के ही कारण औरगंजेब ने अपने ही जनक, अपने ही पिता बादशाह शाहजहाँ को बंदी बनाकर, उसकी सत्ता को छीन लिया। क्या कमी थी सत्ता विहीन रहते हुए भी ? सब प्रकार की सुख, संपदा, नौकर, चाकर उसके पास थे। सब प्रकार के सुख उसे प्राप्त थे किन्तु फिर भी अपने ही पिता को जेल में डाल कर उससे सत्ता छीन कर अपना आधिपत्य स्थापित करने की। यह सब लोभ का ही तो परिणाम है। आज हमारे देश की भी यह ही अवस्था हो रही है। देश के उच्च स्थानों पर बैठे अनेक मंत्रीगण आज जेल की सींखचों में बंद हैं क्योंकि लोभ ने उनका पीछा नहीं छोड़ा। अपार धन के स्वामी होते हुए भी लोभवश धन को प्राप्त करने के लिए गलत मार्ग पर चले व चल रहे हैं।

पारिवारिक संपत्ति के बंटवारे के समय आज भाई अपने ही भाई के अधिकार पर कब्जा जमाने के लिए लड़ता हुआ देखा जा सकता है। इस अवसर पर अनेक संकट खड़े होते हैं। अनेक बार तो कुछ लोग इस अवसर पर अपने जीवन को भी खो बैठते हैं। यह सब क्या है ? यह हमारे अन्दर दुर्गुणों की, दुर्वासनाओं की सत्ता का ही परिणाम है। जब हम दुर्गुणों को अपने जीवन का अंग बना लेते हैं तो उसके ऐसे ही परिणाम पाते हैं। इन दुर्गुणों के ही कारण हम अपने ही परिजनों के लिए कष्टों का कारण बनते हैं। जब परिजन ही धन के लोभ में एक दूसरे के विनाश को तत्पर हो सकते हैं तो अन्यों की क्या चर्चा करें ?

अन्य तो होते ही अन्य हैं। वह तो प्रतिक्षण अवसर की ही खोज में होते हैं। अवसर पाते ही महाविनाश का कारण बनते हैं। अत: अन्य लोग शत्रु भावना से अथवा लोभ की भावना से दूसरों की धन सम्पदा व भूमि पर बलात् अधिकार कर उन्हें हानि पहुँचाने का यत्न करते हैं। मन्त्र कहता है कि जहाँ भी ईर्ष्या-द्वेष की भावना है, जहाँ भी लोभ प्रभावी है, वहां एक मनुष्य दूसरे की हानि करने में कभी संकोच नहीं करता। जो व्यक्ति दुर्गुणों तथा दुर्व्यसनों से ग्रसित है, वह कभी दूसरे की सहायता नहीं कर सकता, वह तो दूसरे का विनाश कर उसकी धन सम्पदा का स्वामी बनने का प्रयास करता है। तभी तो प्रतिदिन लूटपाट, आगजनी व कत्लेआम की घटनाएं हमें सुनने को मिलती हैं। कर्मों से नष्ट-भ्रष्ट ऐसा व्यक्ति और कर भी क्या सकता है ? विनाश ही उसका उद्देश्य होता है, विनाश ही उसका जीवन होता है तथा विनाश ही उसका कर्तव्य होता है।

मन्त्र का दूसरा भाग रक्षा का मार्ग बताते हुए कहा है कि वह प्यारा प्रभु ही मेरा आतंरिक कवच है। परमात्मा का अभिप्राय : उस महान प्रभु से है उस ज्ञान से है, उस सत्य से है, उस आत्मबल से है, उस आस्तिकता से है, जिस की शरण में रहते हुए हम अनेक सुखों के स्वामी बन अपने जीवन को रक्षित करते हैं। परमात्मा से रक्षित हो जब हम आत्मबल के स्वामी बन जाते हैं तो सब प्रकार की सम्पति की रक्षा की शक्ति हम में आ जाती है, जब कि आस्तिक व्यक्ति सब प्रकार के पापों से स्वयं को रक्षित करने में सक्ष्म होता है। यह आत्मबल तथा आस्तिकता ही मनुष्य का आतंरिक बल है। जो मानव इन दो शक्तियों का धनी है, उसकी आतंरिक शक्तियां इतनी शक्तिशाली हो जाती हैं कि वह बड़े से बड़े संकट का सामना भी बड़ी सरलता से कर सकता है। जब इन दोनों के साथ ज्ञान और सत्य मिल जाते हैं तो सोने पर सुहागे का काम होता है। ज्ञान और सत्य मानव को बल प्रदान करने वाले होते हैं। इस प्रकार आत्मबल तथा आस्तिकता के साथ जब सत्य व ज्ञान का मिश्रण हो जाता है तो यह मिल कर मानव का आतंरिक कवच बन जाता है। यह आतंरिक कवच मानव को अन्दर की अनेक बुराईयों से रक्षा का कार्य करता है।

इस प्रकार आतंरिक कवच को धारण कर मानव को उचित रूप से कर्तव्य का बोध होता है, कर्तव्यबोध से मानव सत्य व्यवहार को अपनाता है, सत्याचरण करता है। सत्याचरण से उसके अन्दर आस्तिकता का प्रवेश होता है। यह आस्तिकता ही है, जो मनुष्य को लोभ से बचाती है, यह आस्तिकता ही है जो मानव को द्वेष से रक्षित करती है तथा यह आस्तिकता ही है, जो मानव में लोभ की भावना को बलवती नहीं होने देती, इस कारण ही कहा गया है कि ज्ञान और सत्य आत्मा को बल देते हैं तथा यह आत्मबल मनुष्य को आस्तिक बनाता है। इस कारण ही इसे रक्षा कवच कहा गया है। अत: हम आंतरिक ईर्ष्या, द्वेष से बचते हुए आत्मबल, आस्तिकता, ज्ञान व सत्य को धारण कर आत्मबल को बलवान बना कर सकल सुखों को प्राप्त करें।

वार्षिक उत्सव

आर्य समाज वेद मन्दिर आर्य नगर गुलाब देवी हस्पताल रोड जालन्धर का वार्षिक उत्सव 8 मई से 14 मई तक मनाया जा रहा है। अपना कार्यक्रम बनाते समय इन तिथियों का ध्यान रखे। आप सभी सपरिवार सहित सादर आमन्त्रित हैं।

-वेद आर्य मन्त्री

सम्पादकीय.....

श्रेष्ठ गुणों को अपनाएं और आर्य बनें

संसार के सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद में मनुष्य को उपदेश देते हुए कहा गया है कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अर्थात् हे मनुष्यों! सारे संसार को आर्य बनाओ। जब वेद की यह घोषणा हमारे सम्मुख प्रस्तुत होती है तो मन में विचार आता है कि आर्य कौन है? आर्य किसे कहते हैं? और आर्य कहलाने का अधिकारी कौन है? जिसे कि हमने अपने और दूसरों को बनाना है। शास्त्रों में अनेक प्रकार से आर्य शब्द की व्युत्पत्ति दी गई है। व्याकरण-कर्त्ता पाणिनि मुनि ने आर्य की सिद्धि में अर्यः स्वामीवैश्ययोः सूत्र से प्रदर्शित किया है कि अर्य का अर्थ है स्वामी। अर्थात् जो इन्द्रियों का स्वामी है, जितेन्द्रिय है, वह अर्य कहलाता है। स्वार्थ में अण् प्रत्यय करने पर आर्य शब्द सिद्ध होता है और उसका भी वही अर्थ जितेन्द्रिय है। सदाचार आदि श्रेष्ठ गुणों को धारण करने वाला व्यक्ति आर्य कहलाने का अधिकारी है।

निरूक्त शास्त्र के प्रणेता महामनीषी यास्कमुनि ने यवं वृकेण..... ज्योतिश्चक्रथुरार्याय मंत्र की व्याख्या करते हुए आर्य के निर्वचन में आर्य ईश्वरपुत्रः लिखा है अर्थात् आर्य का अर्थ है परमेश्वर का पुत्र। अब दूसरा प्रशन उठता है कि परमेश्वर के पुत्र तो सभी हैं फिर आर्य शब्द से विशिष्ट मनुष्य का ग्रहण क्यों किया जाए? इस शंका का समाधान ऋग्वेद के इस मंत्र में किया गया है-

य इन्दोः पवमानस्यानु धामान्यक्रमीत्।
तमाहुः सुप्रजा इति यस्ते सोमविधःत्मनः।।

हे प्रभु! जिसने पवित्रकारक तेजस्वी आपके सत्त्व-न्याय-दया आदि गुणों का अनुकरण किया हुआ है और सदैव तेरे पीछे चलता है अर्थात् तेरी आज्ञाओं के पालने में नित्य तत्पर रहता है, उसे बुद्धिमान लोगों ने सुप्रजा इस नाम से पुकारा है। अर्थात् वह तुम्हारा सुपुत्र कहलाता है।

इससे स्पष्ट है कि यथार्थ में मनुष्य मात्र परमेश्वर के पुत्र हैं। परन्तु जो लोग पिता प्रभु की आज्ञा पालन में सदा दत्तचित्त रहते हैं, वे ही वस्तुतः ईश्वरपुत्र कहलाने के अधिकारी हैं और उन्हीं पर प्रभु अपनी अपार कृपा वृष्टि किया करते हैं। इस प्रकार पता चलता है कि पूर्ण जितेन्द्रिय होकर परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने वाला आर्य होता है। जो अजितेन्द्रिय इन्द्रियदास तथा ईश्वर की आज्ञाओं को भंग करता है, वह अनार्य कहलाता है। बस हमें ऐसे आर्य बन कर व दूसरो को बनाकर जीवन व्यतीत करना है।

ऋग्वेद में आर्य बनने-बनाने के तीन उपाय बताए गए हैं-1.इन्द्रं वर्धन्तः 2. असुरः 3. अराव्णः अपघ्नन्तः। अर्थात् इन्द्र को बढ़ाते हुए, कर्त्तव्य कर्मों में ढ़ील न करते हुए तथा न देने की प्रवृत्तियों को दूर करते हुए, इन तीन उपायों से अपने को तथा विश्व को आर्य बनाते हुए जीवन व्यतीत करें। इन्द्र शब्द परमेश्वर, आत्मा, और ऐश्वर्य का वाचक है। इसलिए इन्द्र को बढाने से अभिप्राय है अपने अन्दर परमात्मा को सर्वात्मना रमाना। सामवेद के अनुसार उपासकों के अन्तस्तल से भक्ति का रस इस भान्ति प्रवाहित होना चाहिए जैसे कि दुधारू बढ़िया गौओं के स्तनों से दूध स्वयमेव झरता रहता है। आत्मा को ऐसा समुन्नत करना चाहिए कि मन इन्द्रियों का सदैव स्वामी बन कर रहे। आत्म बल सब बलों में प्रधान है।

कर्त्तव्य कर्मों के करने में कभी ढ़ील न करना, अपितु सदैव सावधान होकर निस्वार्थ भाव से कर्म करना। कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतँ समाः, कर्म कृत्वा अस्तं प्रेत सचा भुवः, कर्मणैव ही संसिद्धिमास्थिता जनकादयः आदि वचन कर्म की महिमा को ही समुपदिष्ट कर रहे हैं। गीता का तो मुख्य तात्पर्य ही कर्त्तव्य पालन की शिक्षा देना है- स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः अर्थात् स्वकर्त्तव्य पालन में मर मिटना श्रेयस्कर है, परन्तु समय पड़ने पर दूसरे के कर्त्तव्य को ले बैठना अत्यन्त हानिकर है। अपना कर्त्तव्य किया नहीं और दूसरे का कर्त्तव्य करने की शक्ति नहीं । इसलिए कहा कि सत्य न्याय कर्त्तव्य करने से जो नहीं चूकता, न विलम्ब करता है, वही कल्याणकारी होता है।

इसी प्रकार तीसरा उपाय न देने की प्रवृत्तियों को सदैव दूर हटाए रखना, यह भी आर्यत्व की प्राप्ति के लिए अत्यन्त आवश्यक उपाय है। ज्ञान है तो अज्ञानी को दें, वस्त्र है तो नंगे को वस्त्र दें, अन्न है तो भूखे को अन्न दें, आश्रय है तो निराश्रय को आश्रय दें, डरे हुए को अभय दें, धर्म दें, न्याय दें। बस तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः के अनुसार दूसरों को दे कर स्वयं भोग करें। इस प्रकार आर्यत्व की प्राप्ति के लिए इन्द्र वृद्धि, कर्त्तव्य पालन में सजगता तथा त्यागभाव ये तीन उपाय करने के हैं। इसी प्रकार तीन उपाय न करने के भी हैं-

अपापशक्तस्ततनुष्टिमूहति, तनूशुभ्रं मघवा यः कवासखः।।

ऐश्वर्यधाम शक्तिमान प्रभु तीन प्रकार के मनुष्यों को परे फैंकता है,उन्हें सुपुत्र की भांति सुख नहीं पहुंचाता। उनमें पहला ततनुष्टि है अर्थात् जो धर्म के आड़म्बर फैलाव तो बहुत करता है परन्तु है धर्म से कोसों दूर। आजकल धर्माडम्बरों का कोई पारावार नहीं । ऐसे लोगों को मनु महाराज ने पाखण्ड़ी, धर्मध्वजी तथा लोकदम्भक आदि नाम दिए हैं। दूसरा है तनूशुभ्र, जो कि शरीर की सजावट में तो दिन रात लगा रहता है परन्तु शरीर के स्वामी आत्मा की चिन्ता पल भर भी नहीं करता और तीसरा है जिसके मित्र कुत्सित आचरण वाले हैं।

इस प्रकार वेद के द्वारा हमें आर्य बनने के लिए जो गुण धारण करने चाहिए तथा जो आर्यत्व को धारण करने में बाधक हैं उनके बारे में बताया गया है। हम क्या धारण करते हैं यह हमारे उपर निर्भर करता है। आर्य श्रेष्ठ पुरूष का नाम है। जिस व्यक्ति ने अपने अन्दर से काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष आदि वासनाओं को समूल नष्ट कर दिया है उसी के हृदय में सद्गुणों का प्रकाश हो सकता है और वही सच्चा आर्य बन सकता है। इसलिए संसार के कल्याण हेतु सभी मनुष्यों को हमेशा श्रेष्ठ गुणों को धारण करने का यत्न करना चाहिए। जिन गुणों के द्वारा समाज का हित हो। हर व्यक्ति श्रेष्ठ बनना चाहता है, धार्मिक बनना चाहता है। इसलिए वेद के अनुसार चलकर ही आर्यत्व के गुणों को धारण किया जा सकता है। वेद हमें मनुर्भव का दिव्य सन्देश देता है।

-प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

दिनांक 28-3-2017 मंगलवार आर्य समाज मन्दिर मोहल्ला गोबिन्दगढ़ में आर्य समाज स्थापना दिवस एवं नव संवतसर बड़े हर्षोल्लास से श्री. डॉ. इन्द्र कुमार शर्मा जी की अध्यक्षता में मनाया गया। यज्ञ का संचालन कुमारी शालू शुक्ला द्वारा किया गया जिसमें विशेष आहुतियां उपस्थित सभी श्रद्धालुओं ने डालीं। भजनों द्वारा श्री अरूण कुमार शुक्ला ने समां बाँध दिया। भजनों उपरान्त आर्य समाज स्थापना दिवस की महत्ता पर श्री नरेश कुमार मल्हण जी ने विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। सभी को आर्य समाज को उन्नत करके ऋषि दयानन्द के स्वपनों को साकार करने के लिए संकल्प लेने की प्रेरणा की। शान्तिपाठ के पश्चात् सभी को प्रसाद वितरण किया गया।

-सुमीत महाजन मन्त्री आर्य समाज

राम भक्त कौन

ले. -नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' 602 जी एच 53 सैक्टर 20, पंचकूला मो. 09467608686, 01724001895

पंचकूला स्थित कार्यालय में बैठा कुछ आवश्यक कार्य कर रहा था कि अचानक पहुंचे अधीक्षक महोदय ने रामनवमी के एक कार्यक्रम का निमंत्रण पत्र देते हुए अनुरोध किया कि चंडीगढ़ इस कार्यक्रम में परिवार सहित पहुंचें। निमंत्रण पत्र लेकर मैंने उन्हें अपनी विवशता बताई कि रामनवमी के दिन मैं पहले ही किसी अन्य कार्यक्रम में बतौर वक्ता स्वीकृति दे चुका हूं। यह सुनकर कुछ मायूस होकर अधीक्षक महोदय ने ताना क़सा ''आप आर्य समाजी तो राम को मानते नहीं शायद इसीलिए बहाना बना रहे हैं।'' उनकी बात सुनकर मैं चौंका और सोचने लगा लोगों विशेषकर पौराणिक जगत में यह कैसी भ्रान्ति है कि आर्य समाज राम को नहीं मानता। इसका निराकरण करना मुझे आवश्यक लगा। मैंने आग्रहपूर्वक अधीक्षक महोदय को बैठा लिया और आर्य केन्द्रीय सभा चंडीगढ़ के सहयोग से आर्य समाज सैक्टर 19 में आयोजित होने वाले रामनवमी के कार्यक्रम का निमंत्रण पत्र निकाल कर दिया और बोला ''देखिए श्रीमान मैं कोई बहाना नहीं बना रहा। मैं इस कार्यक्रम के लिए पहले स्वीकृति दे चुका हूं और शायद इससे आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि आर्य समाज मर्यादा पुरुषोतम श्रीराम की शिक्षाओं को मानता है। फिर भी आपके मन में जो भी शंका हो आप नि:संकोच पूछ सकते हैं उनका निराकरण करने का प्रयास करूंगा।''

हमारे बीच हुई उस चर्चा को ही मैंने रामनवमी के दिन आर्य समाज सैक्टर 19 चंडीगढ़ में रखा जिसे मैं इस लेख में भी रख रहा हूं।

उन्होंने पहला प्रश्न दागा ''परन्तु विवेक जी आर्य समाज में हमने कभी राम की मूर्ति तो देखी नहीं फिर आप राम को कैसे मानते हैं?'' मैंने समझाया समाज का पतन यहीं से प्रारम्भ हुआ जब हम चरित्र को छोड़कर चित्र की पूजा करने लगे। हम स्वयं चेतन होकर भी जड़ के आगे नतमस्तक होकर माथा टेकने लगे। हमने रामचरित्र ना पढ़ा ना समझा फिर उन आदर्शों को जीवन में कैसे धारण करते जिनके कारण श्रीराम मर्यादा पुरुषोतम कहलाए। मैंने समझाते हुए कहा

कलयुग के इंसान की, उल्टी देखी चाल।
जड़ के आगे चेतना, क्यों झुकावे भाल।।

इस बात को सुनकर सज्जन थोड़ा चौंके पर जड़ मूर्ति पूजा पर सीधे प्रहार से तिलमिला गए और बोले ''हम राम की पूजा करते हैं, राम नाम की माला जपते हैं और राम की मूर्ति में ही राम का चरित्र देखते हैं।'' मैंने उन्हें थोड़ा सा संयत करके पूछा ''राम की पूजा से आपका तात्पर्य क्या है ?'' ''हम भोग लगाते हैं, आरती करते हैं, सीताराम जपते हैं।'' उनका उत्तर था। अब मैंने समझाने का प्रयास किया पूजा का अर्थ है यथायोग्य सत्कार आपने मूर्ति बनाकर उसको भोग लगाकर प्रसाद खिलाने का प्रयास किया क्या कभी उस प्रतिमा ने आपका वह प्रसाद स्वीकार किया या पूजा के नाम पर आया प्रसाद पुजारी पचा गया या वह घूम कर वापिस बार बार बिका। यह समझाते हुए बतलाया कि

पत्थर पूजक तो यहां, पत्थर दिल हैं खूब।
बच्चे बिलखें भूख से, पत्थर पी गए दूध।।

अपने नाम को बार बार जपा क्या उससे राम के चरित्र का कोई ज्ञान हुआ, क्या केवल नाम जपते रहने से मर्यादा पुरुषोतम श्रीराम के जीवन चरित्र को जान मान कर हम अपने जीवन में धारण कर पाए।

अचानक टोकते हुए वह बोले ''अच्छा बताओ आर्य समाज कैसे राम की भक्ति करता है ?'' मैंने समझाने का प्रयास किया ''राम की सच्ची भक्ति तो आर्य समाज ही करता है। हम श्रीराम को मर्यादा पुरुषोतम मानते हैं और वह जीवन भर जिन मर्यादाओं पर चलते रहे उनको जान मान कर हम अपने जीवन में धारण करने का प्रयास करें। देखिये हमारे और आपके श्रीराम की भक्ति का एक मूल अन्तर है। आप कहते हैं सीता-राम, सीताराम, सीताराम कहिये, जिस विधि राखे राम ता विधि रहिये। पर आर्य समाज मानता है सीताराम, सीताराम, सीताराम कहिये, जिस विधि रहते राम ता विधि रहिये। हम जिस विधि राखे राम कह कर स्वयं को अकर्मा बना लेते हैं और वेद में '**अकर्मा दस्यु**' कहकर कर्महीनता की भर्त्सना की गई है। अपितु यजुर्वेद के चालीसवें अध्यया के दूसरे मंत्र में **कुर्वन्नेह वेह कर्माणि...** कहकर सौ वर्षो तक कर्म करते हुए जीने की इच्छा करने का आदेश है। अब हम जीवन में कार्य कैसे करें तो इसकी प्रेरणा हम मर्यादा पुरुषोतम श्रीराम के जीवन से भी ले सकते हैं।

मेरी बात सुनकर कुछ खीझकर वह बोले यदि आप इतना ही राम को मानते हैं तो उन्हें ईश्वर क्यों नहीं मानते और उनके मन्दिर क्यों नहीं बनाते। उनकी बात सुनकर मैं हंसा ''देखिये महाशय ईश्वर का सच्चा स्वरूप तो महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के दूसरे नियम में दे दिया है जो कि ईश्वर सच्चिदानन्द, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम भी ईश्वर के इसी स्वरूप को मानते थे और यज्ञ किया करते थे। अब बतलाओ जिस ईश्वर की पूजा राम स्वयं किया करते थे हम भी उनकी पूजा करें या फिर उनके सिद्धांतों के विपरीत उस ईश्वर के भक्तों की पूजा प्रारम्भ कर दें। हम श्रीराम को मर्यादा पुरुषोतम आर्य वैदिक धर्म पालक मानते हैं। जिन आर्य सिद्धान्तों का श्रीराम ने जीवन भर पालन किया हमारा भी कर्तव्य बनता है कि उन मर्यादाओं, सिद्धांतों, शिक्षाओं को हम भी जाने और मानें यदि सही मायनों में हम उनकी भक्ति करते हैं। जहां तक राम मन्दिर का प्रश्न है तो अयोध्या किसी स्थान विशेष का ही नाम नहीं अपितु अष्ट चक्रा नव द्वारा मम शरीर पुर अयोध्या अर्थात् आठ चक्रों नौ द्वारों वाला हमारा यह मनुष्य शरीर ही अयोध्या नगरी है और हम राम चरित्र को जान मान कर उन सिद्धांतों शिक्षाओं, मर्यादाओं का पालन करते हुए अपने मन मंदिर में उन्हें स्थापित करके अपने अंदर ही भव्य राम मंदिर का निर्माण कर सकते हैं। मेरी आत सुनकर अधीक्षक महोदय अब संतुष्ट हो चुके थे और बोले ''चलिये इस बार मैं भी आर्य समाज के रामनवमी के कार्यक्रम में चलूंगा।

आर्य समाज फरीदकोट में आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह

आर्य समाज स्थापना दिवस एवं नववर्ष के शुभ अवसर पर आर्य समाज मन्दिर, फरीदकोट (पंजाब) में एक भव्य कार्यक्रम किया गया जिसमें अखण्ड 12 घण्टे का गायत्री महायज्ञ किया गया। पं० कमलेश कुमार शास्त्री जी ने बताया कि इस अवसर पर ओ३म् ध्वज फहराया गया। ओ३म् ध्वज फहराने के लिए श्री खेमचन्द्र पाराशर, थाना इन्चार्ज सदर थाना कोटकपूरा को आमन्त्रित किया गया जिन्होंने प्रातः 10.00 बजे ओ३म् ध्वज फहराया। सभी आर्य समाज के अधिकारियों ने थाना इन्चार्ज महोदय को सम्मान चिन्ह देकर सम्मानित किया। इस आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर डा. निर्मल कौशिक जी ने आर्य समाज के बारे में जानकारी दी एवं आर्य समाज के नियमों को बताया। आर्य शब्द की श्रेष्ठता को भी बताया। नववर्ष की इस शुभ-बेला पर आर्य समाज के प्रधान श्री कपिल सहूजा, मन्त्री श्री सतीश शर्मा, सदस्य श्री मदन मोहन देवगन, श्री नरेश देवगन, श्री रामनाथ वर्मा, श्री रवि वर्मा, डा० विशेष बुद्धिराजा कोटकपूरा, श्री आशीष गोयल, श्रीमती तरस्सेम शर्मा, श्रीमती सुधा शर्मा, श्रीमती पुष्पा वर्मा, पं० भवानी शंकर एवं आर्य समाज के समस्त सदस्यगण उपस्थित हुए। आर्यसमाज के सुयोग्य पुरोहित पं० कमलेश कुमार शास्त्री के संचालन एवं मार्ग दर्शन में आर्य समाज फरीदकोट निरन्तर प्रगति के ओर अग्रसर है।

-मन्त्री सतीश कुमार शर्मा
आर्य समाज मन्दिर फरीदकोट

पाप से कैसे बचें

-ले० महात्मा चैतन्यमुनि महाढेव, तहसील सुन्दरनगर, मण्डी (हि०प्र०)

अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम।।
(यजु०5-36,7-43)

मन्त्र में कहा गया है कि प्रभु को हम इसलिए नमस्कार करते है, उसकी स्तुति इसलिए करते हैं क्योंकि वह हमारी कुटिलताओं को दूर करते हैं तथा हमें पाप से बचाते हैं। मन्त्र में ही यह भी बता दिया कि हम कुटिलताओं तथा पाप से कैसे बच सकते हैं। इसके लिए मन्त्र में मुख्यरूप से दो बातें कही हैं-1. हम पवित्र साधनों से ही धन कमाएं और 2. हमारे समस्त कर्म ज्ञान-विज्ञान पूर्वक हों अर्थात् मर्यादित हों। सर्वप्रथम धन की ही बात कर लेते हैं..... धन की पवित्रता के सम्बन्ध में वेद में प्रार्थना की गई है-**एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम्। वर्षिष्ठमूतये भरा।।** (ऋ०1-8-1) हे प्रभो ! हमारे रक्षण के लिए ऐसा धनैश्वर्य दीजिए जो सबके साथ बांटकर खाया जाए। उस धन को प्राप्त करके हम उस धन के विजेता बने रहें। जिस धन से हम सहनशील और स्वावलम्बी बने रहें और वह धन अतिशयेन संवृद्ध हो, हमें बढ़ाने वाला हो, हमारे जीवन में सुखों की वर्षा करने वाला हो। पाप से बचने का दूसरा मुख्य उपाय बताया **वयुनानि विद्वान्** अर्थात् हमारे समस्त कृत्य ज्ञान-विज्ञानपूर्वक हों तथा हमारा जीवन मर्यादित हो। वेद कहता है (अथर्व०5-1-6) **(सप्त मर्यादाः कवयः)** जो सात मर्यादाएं परमात्मा व ऋषियों ने सुनिश्चित् की हैं (मर्यादाएँ इस रूप में हैं कि वह-वह कार्य हम न करें) **(तासाम् एकाम्)** उन में से एक को भी **(अभ्यगात्)** जो प्राप्त होता है अर्थात् वह कार्य करता है तो वह **(अंहुरः)** पापी होता है। इन सात मर्यादाओं का वर्णन यास्कमुनि जी ने निरूक्त में इस प्रकार किया है : 1. स्तेय-(चोरी करना), 2. तत्पारोहण-(व्यभिचार करना), 3. ब्रह्म-हत्या-(नास्तिकता व प्रभु आज्ञा का उलंघन करना), 4. भ्रूण-हत्या-(गर्भघात करना), 5. सुरापान-(शराब पीना), 6. दुष्टस्य कर्मणः पुनः पुनः सेवा-(दुष्ट कर्म का बार-बार सेवन करना) और 7. पातकेऽनृतोद्यम्-(पाप करने के बाद उसे छिपाने के लिए झूठ बोलना)। यदि व्यक्ति पाप से बचना चाहता है तो इन मर्यादाओं का अक्षरशः पालन करना अपेक्षित है अर्थात् ये-ये काम व्यक्ति को नहीं करने चाहिएं। मर्यादा कहते हैं सीमा को। वेद, संविधान, नियम आदि तथा मनुस्मृति आदि ग्रन्थ हमारे लिए ये सीमाएं निर्धारित करते हैं। यदि हम इन सीमाओं का उल्लंघन करेंगे तो दण्ड के भागी होंगे ही। तनिक यह भी विचार करें कि ऐसे कौन से कारण है जिनके कारण व्यक्ति मर्यादाओं का उल्लंघन करके पाप-कर्म कर बैठता है। इस सम्बन्ध में ऋग्वेद में कहा गया है-

न स स्वो दक्षो वरूण धृतिः सा सुरा मन्युर्विभीदको अचितिः।
अस्ति ज्यायान् कनीयस उपारे स्वप्नश्चनेदनृतस्य प्रयोता।।
(ऋ०7-86-6)

मन्त्र में बताया गया है कि जिन पाप-कारणों से हम उस वरूण-वरण करने योग्य प्रभु की ओर नहीं जा पाते वे हैं-**(धृतिः)** हमारी वासनाएं, **(सा सुरा)** शराब का सेवन करना, **(मन्युः)** अत्यधिक क्रोधी हो जाना, **(विभीदकः)** जुआ खेलना, **(अचित्तिः)** अज्ञानी बने रहना और **(स्वप्नश्चनऽत्)** सदा ही आलस्य व प्रमाद में डूबे रहना। मूलतः पापकर्म के यही कारण होते हैं चाहे इनकी दिशाएं व उपदिशाएं तथा कोटियां अनेक हो सकती हैं। एक दूसरे ही दृष्टिकोण से विचार करें तो पाप की निम्नलिखित कोटियाँ सुनिश्चित् की जा सकती हैं-1. बाल-वृत्तिज पाप अर्थात् बालपने में चिटियों को, बिल्ली, कुत्ते, मेंढक आदि को नाहक ही दुःख देना या उन्हें मार देना। इन्हें बाल-वृत्तिज कहा गया है मगर कुछ बड़े लोग भी इस प्रकार के पाप-कर्म करते हैं। 2. वीर-वृत्तिज पाप-ये वे पाप हैं जिन्हें व्यक्ति किसी प्रकार के अंहकार में आकर कर बैठता है...., 3. भीत्ति-वृत्तिज पाप-कुछ पाप ऐसे भी हैं जो किसी के उकसाने पर या स्वयं ही अपने भय के कारण किए जाते हैं, 4. संस्कारज पाप-पुराने संस्कारों अर्थात् आदतों के वशीभूत होकर जो पाप किए जाते हैं, 5. संस्कृतिज पाप-देश या जाति विशेष द्वारा अवैदिक मान्यताओं के आधार पर जैसे पशुओं की बलि एवं कुर्बानी आदि, 6. चतुवर्गज पाप-जो काम, क्रोध, लोभ और मोह के वशीभूत होकर किए जाते हैं..... वेद में पाप को चुनौती देते हुए कहा गया है-**यो नः पाप्मन्न जहासि तमु त्वा जहिमो वयम्। पथासनु व्यावर्तनेऽन्यं पाप्मानु पद्यताम्।।** (अथर्व 6-26-2) अर्थात् हे पाप ! यदि तू हमें नहीं छोड़ता है तो हम ही तुझे छोड़ देते हैं। जैसे देव बुढ़ापे से तथा अग्नि अदान से दूर रहती है वैसे ही मैं पाप से दूर रहूँ। यहां पर कितनी सुन्दर उपमा दी गई है। वेद में अन्यत्र भी पापों से बचने के बहुत से सुन्दर एवं सार्थक उपाय बताए गए हैं जिन में से कुछ की चर्चा करते हैं-1. दृढ़ इच्छा अर्थात् संकल्प-दृढ़ इच्छा तथा हार्दिक-संकल्प के समक्ष कोई भी पाप-वृत्ति एक क्षण भर के लिए भी नहीं ठहर सकती है। वेद में संकल्पशक्ति को चित्त की माता कहा है, जो हमारे मन में ही प्रतिष्ठित है। यदि हम इस संकल्प-शक्ति को एक ही केन्द्र-बिन्दु पर लगाने का अभ्यस्त बना लें तो अपने अन्तः शत्रुओं का नाश करके पापों से बच सकते हैं। कामनाएं दो ही प्रकार की होती है भद्र और अभद्र। संकल्प-शक्ति से हम केवल भद्र ही कामनाओं को उठाने की सामर्थ्य प्राप्त कर सकते हैं। महर्षि व्यास जी कहते हैं (यो० द०1-12)-**'चित्तनदी नामोभयतो वाहिनी, वहति कल्याणाय च वहति पापाय च।'** यह चित्त की नदी एक है जो दो ओर बहती है-कल्याण की ओर और पाप की ओर। संकल्प-शक्ति के द्वारा हम अपनी वृत्ति को कल्याण मार्ग पर लगा सकते हैं....., 2. यज्ञ एवं सत्यसंकल्प-हमारा संकल्प सत्य से परिपूर्ण होना चाहिए। यह तभी हो सकेगा जब हम अपने जीवन को यज्ञमयी भावना से परिपूर्ण बनाऐंगे। स्वयं को देवपूजन, संगतीकरण और दान से सर्वदा जोड़े रहें। वेद कहता है-'मैं किसी भी पापकर्म को न करूं-ऐसा सत्य-संकल्पशील व्यक्ति 'देवसंरक्षण' में आ जाता है।' 3. पापों में दोष-दर्शन-जब तक हम पापों में दोषदर्शन नहीं करेंगे तब तक उनसे बचना कठिन हो जाता है। प्रतिक्षण गहराई से चिन्तन करना चाहिए कि क्या ये पाप-कर्म मुझे सुख दे सकेंगे, समृद्धि दे सकेंगे, शान्ति दे सकेंगे, आत्मिक आनन्द दे सकेंगे? जब बार-बार इस प्रकार का चिन्तन करेंगे तो अपनी आत्मा से ही आवाज आएगी कि यह सब तो नहीं बल्कि पाप-कर्मों से अन्ततः दुःख ही दुःख प्राप्त होंगे, अशान्ति ही मिलेगी, अपयश ही मिलेगा....., 4. वेदोपदेश, आप्तपुरूषों का संग-जो व्यक्ति प्रमादरहित होकर वेद-स्वाध्याय में लगा रहा है तथा निरन्तर आप्तपुरूषों की संगती में रहता है वह भी पाप-कर्मों से बच जाता है। 5. सात्विक भोजन-यजुर्वेद (यजु०8-13) में देवों, मनुष्यों, माता-पिता और आत्मा तथा अन्य समस्त पापों से बचने के लिए सात्विक भोजन पर बल दिया गया है क्योंकि हम जैसा अन्न ग्रहण करेंगे वैसी ही हमारे मन-चित्त की वृत्तियां होंगी जिनके कारण हम पाप या पुण्य कर्म करते हैं। 6. पाप-वृत्ति को वशीभूत करना-अन्ततः जीवन के उत्थान या पतन का उत्तरदायी स्वयं व्यक्ति ही है अतः किन्हीं भी उपायों से सदा जीवन निर्माण में लगे रहना चाहिए। उस में से एक उपाय यह भी है कि स्वयं ही अपनी पाप-वृत्ति से बातचीत करें और उस वार्तालाप से किसी निर्णय पर पहुंचें। उसे सुविचार दें..... उस पाप-वृत्ति से ही अनुनय-विनय करें कि चल अब हम पुण्य ही कर्म करें... इस प्रकार समझा-बुझाकर उसे भद्रता से भरें... उसे प्रेम मार्ग से श्रेय मार्ग की ओर ले जाने का प्रयास करें..., 7. ब्रह्मोपासना-परमात्मा की उपासना करने से व्यक्ति की पाप-वृत्ति पूर्णरूप से समाप्त हो जाता हैं.....

योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः

-ले० अभिमन्यु कुमार खुल्लर 22, नगर निगम स्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 (म. प्र.)

(गतांक से आगे)

सुपुत्री मनीषा के प्रथम श्रेणी में हायर सेकेन्डरी पास करने तक जमाना बदल गया था।

ईर्ष्या जलन की आग किसी को नहीं छोड़ती। अपने-पराए में, सम्बन्धों की निकटता में, किसी का भी ख्याल नहीं करती। तुम्हारा पुत्र विदेश में पढ़ने गया है। तुम लोग पहले भी सपरिवार विदेश घूम आए हो। अब यूरोप भी घूम लोगे और हम.....। यह सम्वाद पिता-पुत्र का है।

तुम दोनों तो सरकारी पेंशनर हो। पेंशन बढ़ती ही है, घटती नहीं। हमारी तो बैंकों से प्राप्त ब्याज की आमदनी है जो घटती ज्यादा है बढ़ती कम है। इसी सम्वाद का अगला अंश-भाभी समझदार हैं, सलीके से रहती हैं और यह..... (अपशब्दों की भरमार) कहते हुए भूल जाते हैं कि जिससे कह रहे हैं, उसकी सगी बहन उनकी पत्नी है।

अग्रज ने कहा-तुम खाली बैठे हुए हो। समय कैसे काटते होगे ? मैं तो फैक्टरी जाता हूँ। दिनभर काम देखता हूँ। मेरे पास तो समय ही नहीं है। मैंने निवेदन किया कि मैं दयानन्द का कर्ज उतार रहा हूँ। उसी के चिन्तन-मनन में मग्न रहता हूँ। कोई विषय सूझने पर लेख लिखता हूँ। इसको वे निठल्लापन समझते है। मेरे लेखन कार्य को भी बकवास समझते है क्योंकि उससे कोई अर्थोपार्जन नहीं होता। केवल समय नष्ट होता है। 'लक्ष्मी के पीछे भागने वालों का यही सोच होता है। मेरा एक परम हितैषी मित्र भी कहता है-स्वास्थ्य की कीमत पर लेखन कार्य का कोई औचित्य नहीं है। फिर तुम्हारे पढ़ने-लिखने से तो कोई दुनिया नहीं बदल जावेगी। महर्षि कहते है किसी की मत सुनो। तुम मेरे कर्जदार हो। कर्ज चुकाने के लिये तुम वचनबद्ध हो। स्मरण हो आया मैंने एक लेख में ऐसा ही कुछ लिखा था।

मैंने सुपुत्र अमित के बी. एस. सी (मैथ्स) में उत्तीर्ण करते ही एक वर्ष बचाने और, ग्वालियर विश्वविद्यालय की अपेक्षा भारत की सिलिकोन वैली के बेंगलुरू में उत्तम शिक्षा के लिये प्रख्यात आर. वी. कालेज ऑफ इन्जीनियरिंग में, डोनेशन कोटा में प्रवेश करा दिया। एक अत्यन्त परिचित श्रीमती जी ने प्रतिक्रिया दी हमारे बच्चे तो बिना डोनेशन पढ़े हैं। जब उनका एक सुपुत्र सर्टिफिकेट/डिप्लोमा कोर्स कम्प्यूटर साइंस में पास कर कॉल सैन्टर में लग गया तो वह शेखी बघारती थीं कि वह अमेरिकन बैंक में है। रात में भी काम करना पड़ता है। अमित प्रथम श्रेणी में एम. सी. ए. उत्तीर्ण हुआ। दस वर्ष से भी ज्यादा समय से कैलीफोर्निया, यूएसए की सिलिकौन वैली में कार्यरत है। दो वर्ष पूर्व घर भी खरीद लिया है। अमित के अमेरिका पहुंच जाने के बाद उनके दिल पर क्या गुजरी होगी वही जानती होंगी या उनका परमात्मा। इन ही श्रीमती जी ने नृत्य कार्यक्रम देखने और पांच सितारा होटल में डिनर का निमंत्रण दिया। अमित ने उत्तर नहीं दिया। कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। गया भी नहीं। अमित माँ के बहुत करीब है, वह उसकी बैस्ट फ्रेन्ड है। उन्हें बताया मां उन श्रीमती जी से क्या बताता कि कालेज लाइफ से ही मैं पाँच सितारा होटलों में जाता रहा हूँ।

मेरे दामाद श्री देवेन्द्र कपूर की जब दिल्ली में पदस्थापना हुई तो उन्होंने नई मारूती 800 बेचकर फोर्ड आईकोन कार खरीद ली। कारण पूछने पर बताया कि दिल्ली में मारूती वालों को हीन दृष्टि से देखा जाता है। टटपूंजिए, यतीम समझा जाता है। एक से एक महंगी कार, आलीशान कोठी खरीदने, बनवाने की होड़ लगी हुई है। परिवार में प्रत्येक व्यक्ति की, वृद्ध माँ-बाप यदि साथ रहते हों, गाड़ी मकान अलग होना चाहिए। यह स्टेटस सिम्बल या शान शौकत का दिखावा ईर्ष्या, द्वेष का ही तो परिणाम है।

आर्यजगत् के सबसे उत्कृष्ट मासिक आर्यसंसार की स्थापना से ही अवैतनिक सम्पादक रहे स्मृतिशेष वैदिक विद्वान प्राध्यापक उमाकान्त उपाध्याय जी से, दूरभाष वार्तालाप के मध्य मैंने कहा कि लेख में एक सामान्य सी त्रुटि के लिये एक दिग्गज स्थापित एवं अत्यन्त प्रतिष्ठित विद्वान ने आर्य संसार में ही लेख लिखकर प्रतिक्रिया दी और पुन सम्पर्क करने पर धो डाला। श्रद्धेय उपाध्याय जी का उत्तर था कि ईर्ष्या, द्वेष विद्वानों में सबसे ज्यादा होता है। तुम परवाह किए बिना, आगे बढ़ते रहो।

पत्रिकाओं की बात हो रही है तो दो एक की और हो जाय। मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल, मासिक 'रवि' का प्रकाशन करती है। सन् 2002 से 2006 तक लगभग सभी लेख प्रकाशित हुए। 2006 में तत्कालीन सभा प्रधान श्री दलवीरसिंह राघव जी ने हमारी आर्य समाज, नयाबाजार, लश्कर, ग्वालियर के षड़यंत्रकारी निष्कारित सभासद जितेन्द्र पाल सिंह बैस, और संभागीय उप प्रधान परमाल सिंह खुशवाह से मिलकर, 30-40 अराजक तत्वों के साथ ससम्मान धक्का मुक्की दे कर मुझे आर्य समाज से निकाल दिया। आर्य समाज के पूर्व प्रधान डॉ. आनन्द मोहन सक्सेना, बरसों मंत्री रहे, वयोवृद्ध श्री मदनमुरारी जी और मुझे आर्यसमाज की प्राथमिक सदस्यता से भी निष्कासित कर दिया। प्रकरण न्यायालय में चला और अब उच्च न्यायालय में लम्बित है। मासिक रवि में मेरे लेखों का प्रकाशन बन्द हो गया। श्री राघव जी की एकछत्र सत्ता को पलटकर आसीन श्री प्रकाश आर्य उन्हीं की नीति पर चल रहे है। श्री राघव जी और श्री परमाल जी कुशवाह सम्मान उनकी कार्यकारिणी में स्थान पाए हुए है। और मैं वैदिक रवि से बहिष्कृत लेखक हूँ।

आर्यसमाज सान्ताकुज मुम्बई की पत्रिका 'नूतन निष्काम पत्रिका भी गुटबाजी का शिकार हो गई है। दो एक लेख प्रकाशित हुए थे कि आर्य समाज सान्ताक्रुज दुर्घटना ग्रस्त हो गया। परोपकारिणी सभा अजमेर का बहुप्रचारित नारा है, हुतात्मा पं. लेखराम का कथन कि तहरीर (लेखन) और तकरीर (शास्त्रार्थ) का काम बन्द नहीं होना चाहिए। लेकिन परोपकारी की घोषित नीति है कि परोपकारी में प्रकाशन के बाद ही लेख अन्यत्र प्रकाशन के लिये भेजा जावे। 'एक अनोखा ब्राह्मण और उसके द्वारा स्थापित कीर्तिमान' लेख मैने परोपकारी को भेजा ही नहीं था लेकिन वह नवम्बर 2008 के अंक में प्रकाशित हुआ। क्यों और कैसे, मुझे नहीं मालूम।

वर्षो मेरे लेख टंकारा समाचार और उसके बोधांकों में प्रकाशित हुए। मुख पृष्ठ पर भी लेख प्रकाशित हुए। श्री अजय सहगल जी भी परोपकारी की नीति पर ही चल रहे है। टंकारा समाचार नई दिल्ली, अब मेरे लेख प्रकाशित नहीं करता मैने भी लेख भेजना बन्द कर दिया है। महर्षि दयानन्द के कर्जदार को इस सब की परवाह किए बिना आजन्म इसी पथ पर चलना है।

कुछ प्रकरण आर्य समाज नयाबाजार लश्कर ग्वालियर से- 'महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, सदैव अपने आपको आर्य समाज का सेवक मानने वाले स्व. पिता श्री बृजलाल खुल्लर की संतान, डी. ए. वी. नयाबाजार लश्कर का विद्यार्थी, ए. जी. ऑफिस में कार्यरत मुझे 1984 में संकटग्रस्त आर्य समाज का मंत्री निर्वाचित किया गया। जुलाई 2006 तक विकट संघर्षो से जूझते हुए इस कार्यअवधि में कार्य किया।

काल के प्रसंगानुकूल खट्टे-मीठे अनुभवों का आप बी आस्वादन लीजिए-सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक, स्व. वेगराज जी एवं स्व. स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज वेदप्रचार कार्यक्रम हेतु पधारे थे। कार्यक्रम समाप्ति पर पं. वेगराज जी बोले-भटनागर को जितनी दक्षिणा दोगे, उससे कम में नहीं लूंगा। मैं चौंका। मुझे ज्ञात नहीं था कि स्वामी जी का पूर्व सरनेम भटनागर था। फिर दक्षिणा की बात कुछ हुई ही नहीं थी। उनका बोलने का लहजा भी आक्रामक था।

(क्रमशः)

नव विक्रमी सम्वत का स्वागत् तथा आर्य समाज का स्थापना दिवस बड़े हर्षोउल्लास साथ मनाया गया

आर्य समाज मन्दिर गुरुकुल विभाग बासी गेट फिरोजपुर शहर में नव विक्रमी सम्वत तथा आर्य समाज का स्थापना दिवस मनाया गया। जिसमें सबसे पहले वैदिक मन्त्रों द्वारा यज्ञ (हवन) किया गया इस यज्ञ में यज्ञबह्मा के पद पर शिवा शास्त्री जी विराजमान हुये। उन्होंने आज जो हवन करवाया। वह शायद भारतवर्ष में एक मिसाल होगी लगभग 25 महिलायें यजमान बनी उन्होंने कहा देश में आज ''बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ'' का नारा लग रहा है तो हमें भी इसमें भाग लेना होगा जो यजमान बनी श्रीमति स्वर्ण चावला, श्रीमति बीना मोगा, श्रीमति प्रेम सखी, श्रीमति विभा गुलाटी, श्रीमति अनिता भाटिया, श्रीमती राज छाबड़ा, माता जनक तथा डा. सुदेश गोयल के अलावा बहुत सी महिलाओं ने भाग लिया यह हवन शाम साढ़े पांच बजे से 7 बजे तक चला इसमें वैदिक मन्त्रों का उच्चारण किया गया और विक्रमी संवत् का क्या महत्व है बारे बताते हुये आज के दिन महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना की। उनके बाद पं. मनमोहन शास्त्री जी ने नारी शक्ति बारे बताया कि पुरुष की प्रत्येक कामयाबी में नारी का हाथ होता है नारी बिना संसार नहीं, घर नहीं, वंश नहीं होता, हमें नारी का सत्कार करना होगा। जो आज कोख में लड़कियों को मारा जा रहा है ऐसे मां-बाप का कभी भी भला नहीं होगा वह नरक में जायेगे। उन्होंने आज नारी भारत के नहीं बल्कि संसार के हर उच्च पद पर विराजमान है। महर्षि दयानन्द ने जन्म ना लिया होता तो आज नारी पर्दे में होती, खुलकर अपनी जिन्दगी भी व्यतीत नहीं कर सकती उन्होंने कहा प्रत्येक बच्चे को पढ़ाओ। गरीब बच्चे का पढ़ाना ही सच्ची भक्ति है आप एक बच्चे को स्कूल भेजे तथा उसको पढ़ाई का खर्चे सहन करे तो ईश्वर आपको मालामाल कर देगा। बाद में श्री डी. आर गोयल ने सभी का धन्यवाद करते हुए कहा जिन्होंने आज इस महायज्ञ में भाग लिया है सारा वर्ष वह सुखी रहेंगे समृद्ध रहेंगे। उन्होंने आर्य समाज के भवन निर्माण 20000/- की राशि दान दी। इस पर्व में भारत विकास परिषद के सदस्यों ने तथा फिरोजपुर वेल्फेयर सोसाईटी के सदस्यों ने भाग लिया, श्री विजय मल्होत्रा, चोपड़ा किंग, हेमन्त स्याल, शान्तिभूषण शर्मा कुलदीप मैनी, देवेन्द्र खन्ना तथा छावनी तथा शहर से बहुत से लोगों ने भाग लिया। डा. विनोद मेहता विशेष रूप से पधारे। सभी को प्रसाद वितरण किया गया प्रधान इन्द्रजीत भटिया तथा महामन्त्री श्री राजीव गुलाटी ने घोषणा की जल्दी से जल्दी ऐसे कार्यक्रम आर्य समाज द्वारा किये जायेंगे। जिनसे नारी जाति को शक्ति मिले तथा कोख से ही मार देने वालों के विरुद्ध सरकार भी सजा का प्रावधान करे, उसके डर से ऐसी हिम्मत कोई ना कर सके। यह ज्ञानकारी उपप्रधान विपन धवन ने दी। **-विपन धवन उपप्रधान**

आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

आज दिनांक 28-3-2017 को आर्य समाज मन्दिर दीनानगर में स्वामी सदानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में आर्य समाज स्थापना दिवस बहुत ही धूम धाम से मनाया गया। सबसे पहले वृहद् यज्ञ हुआ, यज्ञ के ब्रह्मा पंडित यतीन्द्र जी शास्त्री थे। बहुत ही श्रद्धा के साथ उन्होंने यज्ञ में आहुतियां डलवाई। तत्पश्चात् स्वामी सदानन्द जी महाराज ने ओ३म् ध्वज फहराने की रस्म अदा की, तत्पश्चात् कार्यक्रम आरम्भ हुआ। दयानन्द मठ से आए शास्त्री निवास एवं शास्त्री हरि लाल जी ने ईश्वर भक्ति एवं महर्षि दयानन्द जी के भजनों से आए हुए सभी महानुभावों को निहाल कर दिया। अन्त में स्वामी जी महाराज का प्रवचन हुआ। स्वामी जी ने अपने उदबोधन में कहा कि आज हमारे समाज में जितनी भी सामाजिक कुरीतियां पनप रही हैं हमें संगठित होकर उनको समाप्त करने में लग जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज के दिन महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना ही इसलिए की थी। महर्षि दयानन्द जी के इस मानव जाति पर इतने उपकार हैं कि इनको गिनाया नहीं जा सकता।

इस कार्यक्रम में आर्य समाज के प्रधान रघुनाथ सिंह शास्त्री, मन्त्री रमेश महाजन, कोषाध्यक्ष राजेश महाजन, भारतेन्दु ओहरी, मनोरंजन ओहरी, हर्ष आर्य, गन्धर्व राज महाजन, ईश्वर भल्ला, सरदारी लाल, योगेन्द्र पाल गुप्ता, कैलाश शर्मा, वेद प्रकाश ओहरी, अरुण विज एवं दयानन्द मठ के सभी ब्रह्मचारी एवं शास्त्री गण उपस्थित थे। अन्त में शान्ति पाठ के पश्चात् प्रसाद वितरण हुआ। कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा। **-रमेश महाजन**

मुक्तक

-महात्मा चैतन्यमुनि

बहुत दु:खी है मेरी शौहरत देख जलने वाले,
ठण्ड़े मौसम में भी यूँ ही बेबज़ह उबलने वाले।
हमने खुद को चिराग बनाकर जलाया जीवन भर-
यूँ ही पैदा नहीं होते इतिहास बदलने वाले।।

उजड़ा गुलशन संवारने का अरमान नहीं मिलता,
वरदान बांटने वाला कोई भगवान नहीं मिलता।
कुछ ऐसे भी लोग हैं मगर दुनियां में जिन्हें-
किसी का दिल दु:खाए बिना आराम नहीं मिलता।।

लोगों का जान-माल लूटने के लिए बेशर्मी चाहिए,
बस्तियां जलाने के लिए दिल में कुछ हठधर्मी चाहिए।
ऐसे ही मसीहा पैदा हो रहे हैं मेरे देश में आज-
बाहर निकलने के लिए जिन्हें सुरक्षाकर्मी चाहिए।।

हमारी प्रेरणाओं के अनेकों किस्से सुनाऐंगे,
हमें भगवान, देवता, अवतार या मसीहा बताऐंगे।
अभी ज़िन्दा हूँ इसलिए शौहरत से जलते हैं लोग-
बाद मरने के देख लेना यही लोग आंसू बहाऐंगे।।

महर्षि दयानन्द सरस्वती बोधोत्सव पर विशेष कार्यक्रम सत्यता के बोध की ईश्वर से प्रार्थना

आज आर्य समाज खलासी लाईन के प्रांगण में यज्ञ हुआ। मुख्य यजमान डा० राजवीर वर्मा सपत्नी एवं आर्य समाज खलासी लाईन के प्रधान श्री विजय कुमार गुप्ता रहे। यह वैदिक विद्वान प्रियव्रत शास्त्रीजी के पुरोहित्य में हुआ। यज्ञीय प्रार्थना के उपरांत वैदिक भजनोपदेशक श्री अमरेश आर्य ग्राम चंदेना ने भजनों के माध्यम से वातावरण को भक्तिमय करते हुए कहा-**करूँ नित-नित तेरा ध्यान यही है प्रार्थना मेरी, मिले भक्ति का मुझको दान यही है प्रार्थना मेरी।** उन्होंने कहा पीछे पछताने व रोने से बेहतर है शुरू से ही प्रभु के साथ जुड़े रहने की आदत बनाएँ और कहा वृद्धावस्था में चाहकर भी हम प्रभु चिंतन नहीं कर पाते क्योंकि हमने शुरू से ही प्रार्थना नहीं की होती। प्रभु चिंतन से पहाड़ जैसा दुख भी राई समान छोटा लगता है। तत्पश्चात् भजनोपदेशक अमरेश जी ने भजनों के माध्यम से शिवरात्रि पर्व पर सच्चे शिव का बोध पर भजन सुनाएं और सच्चा आंतरिक व बाहय बोध कराए जाने की ईश्वर से प्रार्थना की। **पर्व पर हमें भी सत्यता का बोध हो** ऐसी ईश्वर से प्रार्थना की। महर्षि बोधोत्सव पर्व मनाया हमारा तभी सार्थक हो०गा यदि हमें भी सत्यता का बोध हो। दुनिया में सबसे बड़ा धन यही धन है इससे बड़ा कोई दन नहीं है। **झूठ के बोध को सच्चा बोध मानना सबसे बड़ी मूर्खता है।** जो रात्रि हमारा कल्याण कर दे वही शिवरात्रि है। महर्षि दयानन्द सरस्वती सच्चे शिव को प्राप्त करने के लिये अडिग रहे और महर्षि जी ने अज्ञान, अंधकार व पाखण्ड को दूर करने का अंतिम श्वास तक काम किया। तत्पश्चात् आर्य शिक्षा निकेतन के छात्र/छात्राओं ने अपने-अपने भजन सुनाए और कहा शिवरात्रि हमारे जीवन में ईश्वर की याद दिलाती है, वैदिक शिक्षा ही है जो जीवन को सफल बनाती है।

मंच संचालन आर्य समाज खलासी लाइन के मंत्री जी रविकांत राणा जी ने किया। तत्पश्चात् शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ और उपस्थित निम्न रही। यजमानों को आशीर्वाद विद्वानों ने दिया। ओमप्रकाश आर्य, आशा रानी, सुरेन्द्र चौहान, सुमन आर्या, रविकांत राणा, सुरेश सेठी, शांति देवी, शोभा आर्या, सुरेन्द्र कुमार आर्य, सुमन गुप्ता, विजय कुमार गुप्ता, रोशनलाल, रविन्द्र आर्य, रमेश राजा, योगराज शर्मा, प्रेमसागर रमा देवी, मूलचंद यादव, रामकिशोर सैनी, कृष्णलाल शर्मा, डा० राजवीर सिंह वर्मा, फतेहचंद पांचाला आदि रहे। तत्पश्चात् प्रसाद वितरण से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

-रविकांत राणा (मंत्री)

वेदवाणी

परमात्मा का दर्शन क्यों नहीं होता

न तं विदाथ य इमा जजान अन्यद् युष्माकं अन्तरं बभूव।
नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप उक्थशासश्चरन्ति।।

-ऋ० १०।८२।७; यजुः० १७।३१

*ऋषि-**विश्वकर्मा भौवनः।।** देवता-**विश्वकर्मा।।** छन्द-**पादनिचृत्त्रिष्टुप्।।***

***विनय**-हे मनुष्यों ! तुम उसे नहीं जानते जिसने कि ये सब भुवन बनाये हैं। यह कितने आश्चर्य की बात है ! तुम्हारा वह पिता है, परन्तु तुम अपने पिता से जुदा (अन्यत्) हो गये हो, तुम्हारा उससे बहुत अन्तर पड़ गया है। ओह ! कितना भारी अन्तर हो गया है ! मनुष्य का तो उसके प्रभु के साथ अन्तर नहीं होना चाहिए। वह प्रभु तो हम मनुष्यों की आत्मा की भी आत्मा है। उससे अधिक निकटतम वस्तु तो हमसे और कोई है ही नहीं, हो ही नहीं सकती। सचमुच वे परम-आत्मा हमारी आत्मा में भी व्यापक हैं। उनसे निकट हमारे और कोई नहीं है। फिर वे हमसे दूर क्यों हैं ? इसका कारण यह है कि हमारे और उनके बीच में प्रकृति का पर्दा आ गया है। हम दो प्रकार के पर्दों से ढके हुए हैं, जिससे कि वह इतना निकटस्थ भी हमसे इतना दूर हो गया है। एक प्रकार के (तमोगुण-बहुल) लोग तो 'नीहार' = अज्ञान से ढके हुए हैं जिसकी धुन्ध में इतने पास में भी उन्हें नहीं देख पाते ; दूसरे (रजोगुण-बहुल) लोगों ने "जल्पि" से, विद्या के शब्दाडम्बर से, पढ़ी-लिखी मूर्खता से निरर्थक जल्पना के पर्दे से अपने-आपको ढक लिया है। ये दोनों प्रकार के मनुष्य अपनी-अपनी दिशा में इतनी दूर बढते गये हैं कि प्रभु से दिनों-दिन दूर होते गये हैं। नीहारावृत लोग तो संसार में "असुतृप्" होकर विचर रहे हैं। वे खाते-पीते मौज करते हुए निरन्तर अपने प्राणों के तर्पण करने में ही लगे हुए हैं। कामनाओं-इच्छाओं का निवास मनुष्य के सूक्ष्म प्राण में ही है। ये ज्यों-ज्यों अपनी बढ़ती जाती हुई अनगिनत कामनाओं को तृप्त कर अपनी इन कामनाओं को पुष्ट करते जाते हैं, त्यों-त्यों ये प्रभु से दूर होते जाते हैं। इसी तरह दूसरे जल्पावृत लोग "उक्थशास्" होते हैं, अर्थात् संसार में बड़े-बड़े शास्त्र पढ़कर, वादविवाद-वितण्डा में चतुर होकर, दूसरों को ज़ोरदार व्याख्यान देते फिरते हैं, परन्तु अपने-आपको नहीं पहचानते। ये जितने भारी वक्ता, लेखक और शास्त्रार्थकर्त्ता होते जाते हैं उतने ही ये ब्राह्य शब्दजाल में ऐसे उलझते जाते हैं कि अन्दर के देखने के अयोग्य होते जाते हैं, अतः अन्दर के आत्मस्थ प्रभु से दूर होते जाते हैं।*

इसलिए आओ, हम लौटें। अपने अन्दर की ओर लौटें और अपने उस आत्मा के आत्मा को पा लेवें जिसके साथ हमें निरन्तर जुड़े रहना चाहिए।

हवन यज्ञ द्वारा उज्जवल भविष्य की कामना

गुरुकुल की पावन तपोभूमि पर निर्मित स्वामी गंगा-गिरी जनता गर्ल्ज़ कॉलेज, रायकोट के प्रांगण में दिनांक 01-4-2017 को श्री योगराज शास्त्री जी के सुयोग्य निर्देशन में हवन-यज्ञ का आयोजन किया गया। पावन मंत्रों के उच्चारण के साथ यज्ञ-कुण्ड में ज्योति प्रज्ज्वलित करके छात्राओं के लिए विभिन्न परीक्षाओं में सर्वश्रेष्ठ परिणाम प्राप्त करने की प्रार्थना की गयी। इस अवसर पर कॉलेज प्रबंधकीय कमेटी के प्रधान श्री रमेश कौड़ा जी, जनरल सैक्रेटरी श्री राजेन्द्र कौड़ा जी, वाइस प्रैसीडैण्ट स. जसवंत सिंह जी एवं डॉ० मनमोहन भनोट जी, मैडम प्रिंसीपल डा० (श्रीमती) सविता उप्पल जी, समूह स्टाफ, छात्र-वृंद तथा इलाके के गणमान्य सज्जन विशेष रूप से उपस्थित थे।

हवन-कुण्ड से उठते हुए धुएं से सारा वातावरण सुगंधिमय एवं पावन बन गया, जिससे सबके मन में पावन-विचार धारा का संचार हुआ। हवन के पश्चात् मैडम प्रिंसीपल जी, स्टाफ तथा छात्राओं ने भजन-गायन करके वातावरण को और भी पवित्र कर दिया। अंत में मैडम प्रिंसीपल जी ने कॉलेज के श्रेष्ठ परिणामों, खेल-कूद के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियों तथा यूथ-फैस्टीवल में प्राप्त हुई उपलब्धियों की चर्चा की तत्पश्चात कॉलेज प्रबंधकीय कमेटी के प्रधान श्री रमेश कौड़ा जी ने छात्राओं को संबोधित करते हुए नारी शिक्षा पर जोर दिया तथा कॉलेज में शुरु होने वाले नये कोर्सों के बारे में जानकारी दी।

-जनरल सैक्रेटरी राजेन्द्र कौड़ा

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमज़ोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।